कथकली

कथकली नृत्य, संगीत और अभिनय का मिश्रण है और इसमें अधिकतर भारतीय महाकाव्यों से ली गई कथाओं को नाट्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

इसकी उत्पत्ति केरल के मंदिरों में विकसित नृत्य नाट्य के दो स्वरूपों रमानाट्टम एवं कृष्णानाट्टम में देखी जा सकती है।

'कथकली' शब्द की उत्पत्ति 'कथा' अर्थात कहानी व 'कली' अर्थात नाट्य शब्दों से हुई है।

उद्भव

इसका विकास केरल में सामंतों के संरक्षण में हुआ।

एक कला के रूप में कथकली का पतन सामंती ढाँचे के विघटन के साथ ही प्रारंभ हो गया।

1930 के दशक में, प्रसिद्ध मलयाली कवि वी.एन.मेनन द्वारा मुकुंद राज के संरक्षण में इसे पुनर्जीवित किया गया।

प्रमुख विशेषताएं

- इसकी विषय-वस्तु महाकाव्यों तथा पुराणों में उल्लिखित कहानियों से ली गई है।
- यह नृत्य शैली अच्छाई और बुराई के मध्य के शाश्वत विवाद का प्रतिनिधित्व करती है।
- यह रास को नेत्रों व भौंहों की गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करने पर बल देता है।
- कथकली द्वारा आकाश अथवा व्योम तत्व को प्रस्तुत किया जाता है।
- विभिन्न चरित्रों को दर्शाने के लिए मुखौटे के साथ-साथ चेहरे पर अत्यंत अलंकृत श्रृंगार का प्रयोग किया जाता है।
- चेहरे के श्रृंगार में विभिन्न रंगों का प्रयोग होता है, जिनका अपना अलग-अलग महत्व होता है। उदाहरण के लिए:

हरे रंग का प्रयोग कुलीनता, दिव्यता व सदगुण को इंगित करता है।

नाक के साथ लाल रंग की पट्टी राजसी वैभव को दर्शाने के लिए प्रयोग की जाती है।

काला रंग, दुष्टता व घृणा को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

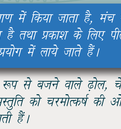

- यह नृत्य खुले प्रांगण में किया जाता है, मंच मोटी कालीन से ढका हुआ होता है तथा प्रकाश के लिए पीतल के दीपक प्रयोग में लाये जाते हैं।
- उषा काल के दौरान सतत रूप से बजने वाले ढ़ोल, चेंडा, मद्दलम् की ध्वनियाँ सम्पूर्ण प्रस्तुति को चरमोत्कर्ष की ओर ले जाती हैं।

प्रसिद्ध कलाकार

रीता गांगुली

गोपीनाथ

गुरु कुचु कुरुप
(1971 में पद्म भूषण से सम्मानित)

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION